PHILOSOPHY
PG III Sem. (Indian Logic)

Dr. S. K. Singh
Mob-9431419951

# साध्य (अनुमान का घटक)

→ अनुमान का दूसरा आवश्यक पद है - साध्य। साध्य के अन्य पर्यायवाची पद हैं - लिंगि, व्यापक, निमेय, गम्य, अप्रतिबद्ध आदि।

→ साधन द्वारा जिस वस्तु की सिद्धि होती है उसे साध्य कहते हैं। दूसरे शब्दों में जिस वस्तु का ज्ञान लिंग द्वारा होता है उसे लिंगि (साध्य) कहते हैं। व्याप्य से अधिक देश में व्याप्त रहने के कारण उसे 'व्यापक' कहते हैं; यथा - धूम व्याप्य है और अग्नि व्यापक। साध्य को निमेय कहने का तात्पर्य यह है कि हेतु (धूम) और साध्य (अग्नि) की नियम रूप व्याप्ति संबंध से नियामक द्वारा निमेय अर्थ का निगमन होता है। आपादक द्वारा जिस वस्तु का आपादन किया जाय उसे 'आपाद्य' कहते हैं। गमक द्वारा जिस अर्थ की सत्ता सिद्ध होती है वह गम्य है। इस भाँति प्रकारान्तर से असिद्ध होने के कारण इसे 'अप्रतिपक्ष' कहा जाता है।

→ वात्स्यायन भाष्य के अनुसार साध्य के दो स्वरूप हो सकते हैं - (i) धर्म ~~विशिष्ट~~ विशिष्ट धर्मी ~~तथा~~ अर्थात् धर्म से युक्त धर्मी तथा (ii) ~~धर्मी~~ धर्मिविशिष्ट धर्म अर्थात् धर्मी से युक्त धर्म। धर्मी वह है जो धर्म को धारण करता है। इस प्रकार यहाँ धर्मी से 'पक्ष' का भी अर्थ लिया जा सकता है, क्योंकि पक्ष (उपर्युक्त अनुमान में पर्वत) धर्म (यथा - अग्नि ~~धूमधूम~~ धूम के स्वभाव या लक्षण) को

Scanned with CamScanner

धारण करता है। ~~इस प्रकार~~

~~इस~~ इस प्रकार 'साध्यतेऽस्मिन् इति साध्यम्' अर्थात् जिसकी साधना की जाती है अथवा जिसकी प्राप्ति का प्रयत्न किया जाता है वह साध्य है। इस व्युत्पत्ति के आधार पर पक्ष भी साध्य रूप स्वीकार किया जा सकता है, यथा - उपर्युक्त अनुमान में 'पर्वत' को ही साध्य या अनुमेय कह दिया जा सकता है किन्तु वस्तुतः वात्स्यायन के अनुसार साध्य 'धर्मविशिष्ट धर्मी' अर्थात् धर्म से युक्त धर्मी है। अतः उपर्युक्त अनुमान में साध्य 'पर्वत' नहीं है वरन् 'अग्नि से युक्त पर्वत' है।

→ बौद्ध आचार्य दिङ्नाग के अनुसार भी साध्य 'धर्मविशिष्ट धर्मी' ही है। दिङ्नाग के अनुसार साध्य तीन प्रकार के स्वरूपों में व्यक्त किया जा सकता है - (i) केवल धर्मी, (ii) धर्म-धर्मी संबंध और 'धर्मविशिष्ट धर्मी'। ~~दिङ्नाग~~ दिङ्नाग ने प्रथम दो प्रकारों को अस्वीकारते हुये अंतिम प्रकार 'धर्मविशिष्ट धर्मी' को ही साध्य कहा है। उनके अनुसार विशिष्ट धर्म से युक्त धर्मी ~~यथा 'विशिष्ट पर्वत अग्नियुक्त पर्वत'~~ या विशिष्ट धर्म से युक्त धर्मी (यथा - पर्वत पर अग्नि है) ही अनुमेय है।

नैयायिक उद्योतकर, वाचस्पति मिश्र तथा जयन्त भट्ट ने बौद्ध मत की आलोचना करते हुये कहा है कि 'साध्य - धर्मविशिष्ट धर्मी' ही अनुमेय है। कुमारिल भट्ट (मीमांसक) भी इसी मत के समर्थक हैं।

Scanned with CamScanner